DR.MALA KUMARI

ASSISTANT PROFESSOR (GUEST

TEACHER)

DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY

A.N.D COLLEGE SHAHPUR

PATORY,SAMASTIPUR

B.A –PART 1 PSYCHOLOGY (HONS)

PAPER-2 ,UNIT-10

MEANING AND NATURE OF SOCIAL CHANGE

LECTURE-97

सामाजिक परिवर्तन के अर्थ एवं स्वरूप

MEANING AND NATURE OF SOCIAL CHANGE

सामाजिक परिवर्तन से तात्पर्य समाज में परिवर्तन से होता है | समाज समाजिक संबंध का एक जाल होता है |अतः सामाजिक परिवर्तन से तात्पर्य सामाजिक सम्बन्धों में परिवर्तन से होता है |सामाजिक संबंध में परिवर्तन से तात्पर्य सामाजिक प्रक्रियाएँ, (SOCIAL PROCESSES) सामाजिक पैटर्न (SOCIAL POTTERNS), सामाजिक मूल्य (SOCIAL VALUES) सामाजिक मानक (SOCIAL NORMS) आदि में परिवर्तन से

होता है |परन्तु यहाँ ध्यान देने वाली बात यह है कि सामाजिक संबंध के इन विभिन्न तत्वों में छोटे –मोटे परिवर्तन को सामाजिक परिवर्तन में शामिल नहीं किया जाता है |इसमें सिर्फ उन परिवर्तन को सम्मिलित किया जाता है जो महत्वपूर्ण एवं विस्तृत प्रकृति के होते है तथा जो पुरे समाज में होता है |जैसे यदि एक हिन्दू परिवार में कोई व्यक्ति बिना दहेज लिए या दिये अपने पुत्र या पुत्री की शादी करता है , तो यह नहीं कहा जा सकता है कि भारतीय समाज में एक महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तन आया है और वह यह है कि इसमें दहेज प्रथा अब समाप्त हो गयी परन्तु थोड़ी देर के लिए यह मान लिया जाये अधिकतर या सभी हन्दू परिवारों में शादी बिना दहेज के होने लगे और लोग इसे सहर्ष स्वीकार कर ले ,तो इसे सामाजिक परिवर्तन में सम्मिलित किया जायेगा |

फिशर (1983) ने सामाजिक परिवर्तन को परिभाषित कुछ उपर्युक्त अर्थ में ही करते हुए कहा है , “समाज के सामाजिक संरचना में ,यानी समाज के प्रचलित मूल्यों ,मानकों भूमिकाओं तथा अन्य इसी तरह के तत्वों जिनसे होकर रहन –सहन के मूल अवस्था की अभिव्यक्त होती है |”

जोन्स (1968) के अनुसार, “सामाजिक परिवर्तन एक ऐसा पद है जिससे तात्पर्य सामाजिक प्रक्रियाओं सामाजिक पैटर्न्स, सामाजिक अन्तः क्रिया तथा सामाजिक सन्गठन के किसी पहलु में होने वाले परिमार्जन या विभिन्नता से होती है |

मेरिल्ल तथा एल्ड्रेज (1975) के अनुसार , “सामाजिक परिवर्तन से अर्थ यह होता है कि अधिक संख्या में लोग वैसे क्रियाएँ करने लगते है जो उन क्रियाओं से भिन्न होता है जो उनके नजदीकी पूर्वजो द्वारा कुछ समय पहले किया जाता है |इन परिभाषाओं और ऐसी कई अन्य परिभाषाओं जिसे अन्य महत्वपूर्ण समाजशास्त्रियों तथा समाज मनोवैज्ञानिकों द्वारा दी गयी

है ,का विश्लेषण से हमें सामाजिक परिवर्तन के मूल स्वरूप के बारे में कुछ महत्वपूर्ण तथ्य पता चलता है जो निम्नाकित है –

(i) सामाजिक परिवर्तन मूलतः समाज के सामाजिक संबंधों में परिवर्तन की ओर संकेत करता है |

(ii) सामाजिक परिवर्तन में यह जरूरी नही है कि समाज के प्रत्येक व्यक्तियों द्वारा स्वीकृत मूल्यों भूमिकाओं तथा मानकों में परिवर्तन आये |उसके लिए आवश्यक यह होता है कि समाज के अधिकतर व्यक्ति समाज के पुराने मूल्यों , भूमिकाओं एवं मनको में परिवर्तन करके उसे स्वीकार करते हो |

(iii) सामाजिक परिवर्तन इस तरह के मूलतः व्यक्तियों की जिन्दगी के पैटर्न एवं मूल्यों में विस्तृत परिवर्तन होता है |

स्पष्ट हुआ कि सामाजिक परिवर्तन एक व्यापक पद है जिसमें समाज में संपूर्ण रूप से होने वाले परिवर्तनों को शामिल किया जाता है |